उत्तरमाला

Iवस्तुनिष्ठ प्रश्न**(3)**

1.आनंद कानन

2.उस्ताद पैगंबर खान और मिट्ठन

3. सभ्य मानव

IIनिम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर तीन या चार पंक्तियों में दो**:-(6)**

1. मानव कल्याण की भावना से प्रेरित तथ्यों का आविष्कार करना ही संस्कृति है और जब संस्कृति का नाता कल्याण की भावना से टूट जाता है तो जो योग्यता आत्म-विनाश के साधनों का आविष्कार करती है वह असंस्कृति बन जाती है। संस्कृति का दुष्परिणाम होगा असभ्यता। जिससे मानव समाज छिन्न-भिन्न और नष्ट हो जाएगा।

2. विचार, चिंतन ,मनन और प्रवृत्तियों का संबंध संस्कृति है। यह एक सूक्ष्म गुण है। सभ्यता स्थूल होती हैं -इसमें रहन-सहन ,खान-पान और पहनावा आता है सभ्यता संस्कृति का परिणाम है किसी भी नयी वस्तु का आविष्कार करना संस्कृति है जैसे आग और सुई- धागे का आविष्कार ।संस्कृति का परिणाम ही सभ्यता है -जैसे आग और सुई धागे के आविष्कार में नए-नए परिवर्तन होना सभ्यता है।

3. बिस्मिल्लाह खाँ श्रेष्ठ और प्रसिद्ध शहनाई वादक थे। उन्होंने पूरे जीवन संगीत की साधना की तथा सफलता प्राप्त की। शास्त्रीय संगीत और शहनाई को विश्व भर में पहचान दिलाई। संगीत की सेवा के लिए उनको सर्वश्रेष्ठ अलंकार भारत रत्न प्राप्त हुआ। वे सभी धर्मों का आदर करते थे। उनका व्यक्तित्व सादगी से भरा था। भारतीय गंगा -जमुनी अर्थात मेल-जोल की संस्कृति का प्रमाण उनमें मिलता है। इस प्रकार उन्हें सच्चे अर्थों में भारत रत्न कहा जा सकता है।

4. काशी में हो रहे निम्न बदलाव बिस्मिल्ला खाँ को व्यथित करते रहते थे:-

1. वहां होता खान-पान में बदलाव।

2. पुरानी परंपराओं का धीरे-धीरे लुप्त हो जाना।

3. काशी में पहले सभी सद्भाव और प्रेम से रहते थे किंतु समय के साथ उनके सांप्रदायिक स्वभाव में कमी आने लगी ।

4.काशी में पहले की अपेक्षा संगीतकारों कम महत्व दिया जाने लगा जिससे रियाज़ में भी कमी आने लगी।

IIIनिम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर आठ से दस पंक्तियों में दें**:-**(6)

1. बिस्मिल्लाह खान हिंदू और मुस्लिम संस्कृति के मेल-जोल के प्रत्यक्ष उदाहरण थे ।एक ओर वे इस्लाम में पूर्ण आस्था रखने वाले सच्चे मुसलमान थे।वे मुसलमानों के सभी धार्मिक आयोजनों के उत्सवों और पर्वों में पूरी श्रद्धा से भाग लेते थे। वे बाला जी और विश्वनाथ के मंदिरों में शहनाई बजाते थे ।हिंदू संस्कृति से उनका लगाव श्रद्धा और सम्मान था।अपना शहनाई वादन आरंभ करने से पूर्व वह बालाजी के मंदिर की दिशा में मुख करके कुछ देर शहनाई बजाते थे। इस प्रकार वे मिश्रित संस्कृति के जीते जाते प्रतीक थे।

2. संस्कृति सभ्यता की जननी है। उसमें मानव में आविष्कार करने की योग्यता उत्पन्न की ।आविष्कार की योग्यता ही सभ्यता है।

हमें सभ्यता संस्कृति व्यक्तियों से मिली है ।उनके द्वारा नये तथ्यों ,वस्तुओं की खोज या आविष्कार ही संस्कृति है।

लेखक ने संस्कृति के तीन रूप गिनाए हैं -आग और सुई धागे का आविष्कार कराने वाली संस्कृति
तारों की जानकारी कराने वाली संस्कृति अपना सब कुछ त्याग करने वाले संस्कृति

उस व्यक्ति विशेष की संस्कृति और उसे संस्कृति द्वारा जो भी आविष्कार हुआ, जो चीज़ उसने दूसरों के लिए आविष्क की वह सभ्यता है।